काव्य मंजरी

जयप्रकाश रावत

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

काव्य मंजरी

ISBN : 978-81-19686-90-2

रचनाकार
जयप्रकाश रावत

संस्करण : प्रथम, 2024
मूल्य : ₹320/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
तानिया सिंह

आवरण
के. शंकर

मुद्रक
APAC Business Solution, Delhi

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com
www.shabdankurprakashan.com

भूमिका

अनुक्रमणिका

1. वदना : 00
2. जाल : 00
3. ज्ञान गंगा : 00
4. प्रकृति और प्राकट्य : 00
5. आँखे : 00
6. अंदाज़ : 00
7. मेरा देश : 00
8. प्रगति पथ : 00
9. ललकार : 00
10. नव श्रजन : 00
11. उदास : 00
12. आन : 00
13. शिल्पकार : 00
14. शातिर यार : 00
15. महक : 00
16. युवा स्वप्न : 00
17. प्रश्न चिन्ह : 00
18. दो रास्ते : 00
19. अंजाम : 00
20. वादा : 00
21. बेरंग : 00
22. असर मौसम का : 00
23. मशाल : 00
24. भाव और मन : 00
25. रक्षाबंधन : 00
26. मित्र : 00
27. चंद्रयान 3 : 00
28. गीत जो राहें भूल गए : 00
29. ला इलाज : 00
30. शिक्षक दिवस : 00
31. शहीदों को नमन : 00
32. इंसान या शैतान : 00
33. अजब ग़ज़ब : 00
34. अंधेरा : 00
35. प्रेम : 00
36. हिन्दी : 00
37. देश राग : 00
38. आँखों देखी : 00
39. हाल मेरे देश का : 00
40. चेतावनीं : 00

41. फ़ासला : 00
42. समझ से परे हैं राम : 00
43. प्यासा सावन : 00
44. शिकारी : 00
45. छोटे क़द वाला : 00
46. गंगा कथा नारी व्यथा : 00
47. यादों के झरोखे से : 00
48. बचपन : 00
49. लाली सवेरे वाली : 00
50. नया सफ़र : 00
51. दीमक और भुजंग : 00
52. पिंजरा : 00
53. शिकारी : 00
54. नज़र अधूरी : 00
55. कारवां : 00
56. नहले और दहले : 00
57. दिल्ली है दिल वालों कीः 00
58. पिता : 00
59. कर्म फल : 00
60. बेबस : 00
61. राज सत्ता : 00
62. देशराग : 00
63. शंखनाद 2024 : 00
64. हमसफ़र : 00
65. सफ़र : 00
66. ज़रा संभल के : 00
67. काम अधूरे : 00
68. कश्मकश : 00

वंदना

संपूर्ण जगत की सरंचना,
माँ शक्ति बिना संभव कैसे!
संप्रभु सर्वेशरि तुम बिन,
संम्यक ज्ञान फले कैसे!

हो निराकार साकर तुम्ही माँ,
विद्या और अविद्या तुम!
तुम्हीं अजा और अनजा तुम
है शिव शक्ति सदा सोह्म!

सूर्य चंद्र का उद्दगम तुम हो,
तुम बिन शाम ढ़ले कैसे!

रुद्रों वसुओं आदित्यों में,
करती हो संचार तुम्ही!
निराकार साकार रूप में,
करती हो झंकार तुम्हीं!

भक्तों का आधार तुम्हीं माँ,
श्रद्धा प्यार पले कैसे!

पिंड मध्य हो शक्ति चक्र,
है योग शक्ति अनुपम अपार।
हो ऊँकार हो निराकार तुम,
ज्ञान चक्षु हो गुणागार!

अंधकार में ज्ञान ज्योति बिन,
अंतस दीप जले कैसे!

शब्दनाद ध्वनि गुंजन के बिन,
श्रुति कीरत वंदन कैसे!
अलख निरंजन नर्तन कैसे,
वीणा तार सजे कैसे!

चल और अचल सभी बंधन में
पथ पर प्रगति अटल कैसे।

जड़ चेतन में आप विराजो,
श्रद्धा का उद्‌भव की जे।
दीनों दुःखियों का दुख माता,
आप कृपा कर हर लीजे।

आयोजन संपूर्ण कहाँ माँ,
व्यर्थ नियोजन सब मेरे!
और प्रयोजन कोई नहीं माँ
हैं गुणगान सभी तेरे!

आप कृपा बिन है महादेवी,
भावी प्रबल टले कैसे!

जाल

आज ये खेल तमाशा है,
कुछ देर भी रंगत है सारी!
कल रात भी दुल्हन हम घर पहुँची,
है आज किसी की अब बारी।!

ये आज नए फिर चेहरे हैं,
कुछ के सर पर सहरे हैं!
हैं बात साथ निभाने की,
महमान नए घर ठहरे है!।

ये पता नहीं वो कहाँ गए,
है कुछ लोगों की तइयारी!

हर दिल की धड़कन अलग सही,
हर शक्स की सूरत अलग रही!
जो जिस्म में रुह बना बैठा,
ये महक चमन में उसकी है!

हर तरफ है उस को फुलबारी,
फूलों में खुशबू जैसे है!

ये सोच यहाँ सब कैसे है,
सब एक ही तौर तरीका है!
पर लगता रंग सभी का है,

जब जिस्म से रह जुदा होगी,
फिर कौन किसी पर है भारी!
आज का खेल तमाशा है,
कुछ देर की रंगत है सारी।

ज्ञान गंगा

है प्रवाहित ज्ञान गंगा वेद विद्या धाम की,
है अनूठा धाम गोरख भूमि अनुसंधान की।

सलिल सरिता राप्ती के तट ये गोरखपुर बसा,
महा योगी नाथ गोरख की कृपा है सर्वदा।

बुद्ध और महा वीर का भी वास गोरखपुर रहा,
प्रेस गीता ने सनातन धर्म दर्शन सब लिखा।

है चिकित्सा और सेवा लक्ष तन मन में बसा,
है नियंत्रित आचरण की नाथ गोरख की कृपा।

स्वस्थ तन हो स्वक्ष भान हो भान हो शिव सक्ति का,
ज्ञान दर्शन की प्रभा हो योग गोरख भक्ति का।

अवैध्य गुरु के त्याग तप की है पताका व्योम में,
नाथ गोरख का तपोबल व्याप्त है इस मौन में।

आदि योगी की पताका आज योगी हाथ है,
आज भारत के युवा को ज्ञान का विश्वास है।

है भवन ये ज्ञान का और भान हो विज्ञान का,
कर्म है दायित्व अपना विश्व के कल्याण का।

वेद संमत ज्ञान पाएँ चाह है प्रभु नाम की,
है प्रवाहित ज्ञान गंगा वेद विद्या धाम की।

प्रकृति और प्राकट्य

बाजी जब तेरी पायल,
झील पै आछाए बादल!
लगी तड़पने बिजली भी,
लहराया तेरा आँचल!

श्वप्न सभी साकार हुए,
बंधन सब बेकार हुए!
गईं उदासी कहाँ किधर,
हवा में था स्पर्श अधर!

कलियों ने पल्कें खोलीं,
देखें कैसा है काजल!

सारा मौसम बदल गया,
देखा सबने रंग नया!
लगी बरसने वर्षा भी,
भीगा तन मन तरसा भी!

कोई रोके क्या रोके,
थे पागल भँवरों के दल!

रात चाँदनी थी कैसी,
मल मल में लिपटी जैसी!
चाँद ने झाका खिड़की से,
सामने थी परियों जैसी!

बदन तराशा लगता था,
संगमरमरी ताज महल!

बाजी जब तेरी पायल
झील पै आ छाए बादल!

आँखे

आँखें तुम्हारी बहुत बोलती हैं,
मगर राज़ दिल के नहीं खोलती हैं!

आँखों में पानी है कोई कहानी,
उलझन में उलझी हो जैसे जवानी!
ये कहतीं हैं आओ चलें आसमां पर,
रहतीं भटकती ना जाने कहाँ पर।

लगता है हर पल हमें तोलती हैं!
आँखें तुम्हारी बहुत बोलती हैं।

हुई आँख शोला कि दिल सबका डोला,
घबराया दिल फिर कुछ भी न बोला!
हुई आँखे शबनम हुए लोग बेदम,
झुलाती हैं जैसे कि लहरों पै हों हम!

गिरह अपने दिल की ये कब खोलाती हैं!
ये आँखें तुम्हारी बहुत बोलती हैं।

इशारों इशारों में करती हैं बातें,
कभी याद आईं जो उल्फत की रातें!
मेरे दिल की बेचौनियों का हाल पूछो,
सवालों के घेरे में खुद ही रहूँ जो।

कहीं देखती हैं कहीं डोलती हैं!
आँखें तुम्हारी बहुत बोलती हैं।

अंदाज़

गीतों का अंदाज़ मेरा,
उन में है अहसास तेरा!
हैं मशहूर जमाने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

लोग सभी ख़ामोश खड़े,
सब के हैं अन्दाज़ बड़े!
नज़र टिकी दीवानों पर,
है विस्वास बहानों पर!

अब रस घोल तराने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

देखो बादल ठहरे हैं,
देख हवा के पहरे हैं!
लहरों को मस्ती सूझी,
उलझ रही हैं एक दूजी!

याद न आ मयखाने में,
दे कुछ साथ निभाने मैं!

गर्म हवा के पहरे हैं,
सब लोग यहाँ पर ठहरे हैं!
हर दिल आहें भरता है,
याद तुझे ही करता है!

दर्द है हर अफ़साने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

हमने कहा क्या तुमने सुना,
नज़रों ने क्या ख़्वाव बुना!
और उलझते जाते हैं,
मगर सिरा कब पाते हैं!

दर्द है बहुत ज़माने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

जान हमारी फंदे में,
ध्यान न लगता धंधे में!
थी जो उम्र कमाने की,
चाहत रोज़ बहाने की!

ख़ाक मज़ा पैमाने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

ये खतरे की घंटी है,
सबको प्यारी अंटी है!
असर किसी पर क्या होगा,
करनी का फल ही भोगा!

मुश्किल है घर जाने में,
दे कुछ साथ निभाने में!

बात समझ कुछ ध्यान लगा,
ढग से सब सामान सजा!
इश्क़ मजा तब लाता है,
कोई और न भाता है!

क्या बाकी दीवानें में
दे कुछ साथ निभाने में!

काम की पूजा कर पहले,
चल फिर नहले पर दहले!
होश गंवाना ठीक नहीं,
प्यार निभाना सीख कहीं!

अब दिल ना बहकाने में,
दे कुछ साथ निभाने मैं!

मेरा देश

है न्यौछावर अपनी जान,
हमको प्यारा हिंदुस्तान!

हैं रातों को झिलमिल तारे,
हैं नदियों के बहते धारे!
प्यासा मरुथल भी फैला है,
सागर जिसके चरण पखारे!

हिमसिखरों का स्वेत मुकुट है,
ईश्वर का वरदान!

मिट्टी की खुशबू सारी है,
हर मुश्किल हम से हारी है!
सारे मौषम भी मिलते हैं,
फूल यहाँ सारे खिलते हैं!

हरीभरी चुनरी पहनाते,
धरती पुत्र किसान!

रोज तिरंगा लहराता है,
गंगा से माँ का नाता है!
त्यौहारों का जोश यहाँ है,
हर दुश्मन खामोश यहाँ है!

विश्व बंधु का भाव लिए हम,
रखते सब का मान!

ज्ञान की प्यास सदा होती है,
गीता मैल सभी धोती है!
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों में,
स्वयं सिद्धि पूजा होती है!

युगों युगों से मान्य रहा,
है वेदों का विज्ञान!

ऊँकार से गहरा नाता,
जिसमें सब ब्रह्मांड समाता!
परदेसी अपना हो जाता,
सबसे प्यार यहाँ पर पाता!

मिट्टी की सोंधी खुशबू का,
है अद्‌भुत विज्ञान!

दुष्मन जब भी नजर उठाए,
सौर्य सभी का होश उड़ाए!
जीओ जीने दो का नारा,
है इसमें विश्वास हमारा!

कर्तव्यों की बलिबेदी ही,
रही हमारी आन!

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
देखे दुनियाँ देश हमारा!
मानवता के मापदंड पर
लिखा हुआ है नाम हमारा!

शत शत नमन सभी वीरों को,
जो देते बलिदान!

भारत अपना देश महान,
हमको प्यारा हिंदुस्तान!

प्रगति पथ

रात का संताप छोड़ो रौशनी का खेल खेलें,
अधखिले मेरे चमन को अब बहारें गोद लेलें।

अब कहानी वो लिखें हम याद जो इतिहास रख्खे,
पर करीने की जगहपर हों नहीं बेमेल सिक्के।

आज दिल के आइने को प्यार से उजला बनालें,
और मेरी चाहतों का अर्थ वो सीधा निकलें।

ह्रदय की सुरताल सब की एक लय में ही मिली हो,
रौशनी इस ओर हो तो ज्योति उसके घर जली हो।

क्यों न उसके दर्द को मैं आज देदू कुछ सहारा,
वेदना उसको अगर हो तो बहे आँसू हमारा।

तख्तियों के लेख पर हो नाम तेरा नाम मेरा,
नाम की पहचान लेकर छा न पाए फिर अंधेरा।

मीर की ग़ज़लें कहीं तो सूर के पद गूंजते हों,
और हवा के मंद झोंके हर कली को चूमते हों।

जो अज़ानों ने पुकारा है भजन मेरा उसीको,
फ़र्क़ फिर किसने दिखाया इस धरा पर आदमी को।

रक्तरंजित कर दिए हैं ये युवा सपने हमारे,
ये हवा दहकी हुई क्यों फूल क्यों हैं अब अंगारे।

ढूडना है हाथ कातिल छुप रहा है किस गली में,
ज़हर बोने पर तुला है इस चमन की हर गली में।

समय की हर लहर को हम सभी एक साथ झेलें,
अधखिले मेरे चमन को अब बहारें गोद लेलें।

ललकार

एक धरती एक अंबर है हमारा,
पंख नफ़रत किस लिए फैला रही है!
जिस धरा पर रौशनी है झिलमिलाती,
फिर धधकती सी हवा क्यों आ रही है!

गीत गाते हैं यहाँ हम ज़िन्दगी के,
हैं अनेकों घर यहाँ पर बंदगी के!
बंदगी के घर यहाँ कितने सजीले,
उग रहे हैं ख़ार क्यों इतने हठीले!

अजनबी ये गंध कैसी आ रही है,
पंख नफ़रत किस लिए फैला रही है!

तोड़ दीं जंजीर सब सदियों पुरानी,
लिख रहा है कौन नफ़रत की कहानी!
हम सभी का एक घर है एक गुलशन,
विश्व देखे इस चमन की अब जवानी!

क्यों अधेरी रात फिर गहरा रही है,
पंख नफ़रत किस लिए फेला रही है!

चाल कोई नफ़रतों की चल न पाए,
दीप कोई अपना घर ही क्यों जलाए!
रौशनी पहुँचे यहाँ सारे घरों में,
कोई तूफां इस शमां को क्यों बुझाए!

अब गुलों की महक बढ़ती जा रही है,
पंख नफ़रत किस लिए फैला रही है!

जब चमकता विश्व में था एक तारा,
रौशनी में था नहाया घर हमारा!
हम सभी हैं इस चमन के ही परिंदे,
साजिशों के बंद हों अब काम धंधे!

आज रंगत फिर चमक दिखला रही,
पंख नफ़रत किस लिए फैला रही है!

हम नहीं विध्वंस में विश्वास करते,
आज अपनी मौत से भी हम न डरते!
जब उठाऐंगे कसम सब लोग मिलकर,
गीत गूजेंगे यहाँ अपनी लहर के!

शरहदों से एक सदा ही आरही है!
पंख नफ़रत किस लिए फैला रही है!

नव श्रजन

जो भी सीख दिया करते हैं,
नव निर्माण किया करते हैं!

बूढ़ी आँखें अंत प्रहर में,
सुष्क धरा को देख रहीं थीं!
ना जाने क्या खोज रहीं थीं,
कुछ दिन आती रोज रहीं थीं!

नन्हा पौधा पास रखा था,
खुरपी तसला वहीं पड़ा था!
वृद्धा जो जल लिए खड़ी थी,
त्वचा देह से अधिक बड़ी थी!

जिज्ञासा वस पूछलिया बस,
समझूं में भी जीवन का सच!
चख पाओगे क्या इसके फल,
देखोगे आने वाला कल!

उठती नज़रों में विश्वास,
जब तक सांसें तब तक आस!
तुम बच्चे हो अपने खास,
नहीं हमें अब ज्यादा प्यास!

मानव हो कर हो न उदास,
कोई मालिक और न दास!
धरती अंबर अपने पास,
सदियों का अपना इतिहास।

हम न रहें कल कोई होगा,
नहीं जानते कल क्या होगा!
अब पर है हम को विश्वास,
अगले पल हों किसके पास!

वृक्ष हवा फल खुशबू देगा,
थोड़ा भोजन धरा से लेगा!
अच्छा नहीं अधिकतम लेना
अच्छा नहीं न्यूनतम देना!

संचित रखना तुम श्रम अपना,
खट्टे मीठे कुछ फल चखना!
तुम भी यह क्रम जारी रखना,
स्वप्न बड़े श्रम भारी रखना!

धरा न बंजर होने पाए,
बीज जहर ना बोने पाए!
जब तक स्वांस लिया करते हैं
नव निर्माण किया करते हैं!

उदास

चाँद सा हँसता चेहरा था जो,
लगता ठहरा ठहरा सा जो!
उसको ये ग़म कौन दे गया,
चाँद सा चेहरा कौन ले गया!

जादा खिलना ठीक नहीं है,
माँ ने कितनी बार कही है!
नजर किसी की लग जाती है,
खिली कली भी मुर्झाती है!

कोई दिल का दाग दे गया!
चाँद सा मुखड़ा कौन ले गया!

बेहतर था गुलशन में रहना,
सब से दिल की बात न कहना!
बात पराई हो जाती है,
महक गुलों की खो जाती है!

चहक छीनकर मोंन दे गया,
चाँद सा मुखड़ा कौन ले गया!

छोड़ो ये ग़म बात भुला दो,
पंखो को कुछ और हवा दो!
कच्चा रंग उतर जाता है,
सच्चा साथ कहाँ जाता है!

स्वप्न नए उपहार दे गया,
चाँद सा चेहरा कौन लेगया!

लोग दगा देने वाले हैं,
लोग हवा देने वाले है!
कुछ हैं वक़्त बिताने वाले,
कुछ दिल में बस जाने वाले!

जिस पर जो था वही दे गया
चाँद सा मुखड़ा कौन लेगया!

जीना कोई खेल नहीं है,
कुछ बातों का मेल नहीं है!
जलता रहे तभी है दीपक,
चाहे ज्यादा तेल नहीं है!

एक इशारा राह दे गया,
चाँद सा चेहरा कौन ले गया!

आन

माना मुसीबत में है जान अपनी,
हैं उसकी निगाहें निगेहबान अपनी!
यहाँ है परिंदों का कब से बसेरा,
शज़र क्या बताएगा पहचान अपनी!

शिकारी निगाहें न सपने सजाऐं,
बदलता रहे शक्ल शैतान अपनी!
हमारा वतन है हमें ना सिखाऐं,
महंगी पड़ेगी उन्हें जान अपनी!

कई दौर आए कई दौर गुजरे
कातिल ने बख्शी थी कब जान अपनी
यहाँ हैं शहीदों की लंबी कतारें,
यही तो ज़मीं है ईमान अपनी!

जिएंगे मरेंगे वतन है हमारा,
छेड़ेंगे शरहद पै जब तान अपनी!
देगा गवाही ये आसमां भी,
होती है वीरों की क्या शान अपनी!

जिओ और जीने दो हम चाहते हैं,
समझें हकीकत को नादान अपनी!
हैं पूजा की थाली में सर भी चढ़ाए,
है फूलों की माला अभयदान अपनी!

मेघ मल्हार

आओ श्याम घिरो घन बनके,
सूखे पात भए उपवन के!
पंछी प्यास लिए भटकत हैं,
जीवन जैसे साथ अगन के!

आओ श्याम घिरो घन बन के!

पपिहा प्यासा टूटी आसा,
संग न छोड़े पर अभिलाषा!
भटकत बन बन प्यास लिए मन,
तरु मुर्झाए वृर्दावन के!

आओ श्याम घिरो घन बन के!

बरसो झर झर बरसो घर घर,
खायो माखन ग्वालिन के घर!
गरजो बरसो लिए दामिनी,
अब न सताओ मन जन जन के!

आओ श्याम घिरो घन बन के!

अधर बांसुरी नित ही बिराजे!
गाइ रँभाए समझ न पाए,
नीर झरत अब रोज नयन के!
अंग न संग चले तन मन के!

आओ श्याम घिरो घन बन के!

हरी चुनरिया दाग न दीखे,
मन अति व्याकुल संग सखी के!
कौन पुकारे पी परदेसी,
शंकाकुल हो माथा ठनके!
आओ श्याम घिरो घन बन के!

गरजे बरसे मेघ पवन संग,
शीत बयार चले नाचत मन!
मेघ मल्हार मयूरा गाए,
बीता बिरह सजन घर आए!

गुपचुप वाँव पवलिया झनक
आओ श्याम घिरो घन बन के!

शिल्पकार

अगर हो सके तो अब देदो,
उन बेनामों को भी नाम!
अद्‌भुत शिल्प दिखाई देते,
मगर नहीं उनकी पहचान!

पीढ़ी दर पीढ़ी सदियों से,
रहा अलौकिक जिनका ज्ञान!
सदियों से मुश्किल मिलपाया,
रोटी कपड़ा और मकान!

सिला लेख बस यही बताते,
किसका धन था किसका दान!
मौंन खड़े अवशेस कह रहे,
रखदो उन बेनामों के नाम!

आँख खुली चाहे धरती पर,
कल्पित तारों का संसार!
गया युवा पन और जवानी,
पाया क्यों फिर भी प्रतिकार!

धन वालों के शौक कहूँ मैं,
या ऐश्वर्य बखान करूँ!
दुनिया चकित भ्रमित पर मैं हूँ,
हाथ कटे आहैं न भरूँ!

रोटी सब्जी जग खाता है,
पीस के पत्थर पचा गया!
बाल बराबर फर्क दिखा तो,
फिर तोड़ा नहीं रहा गया!

मूर्ति रूप पत्थर को देकर,
खुद पत्थर हो जाते हैं!
पत्थर पर सब लिखने वाले,
लोग कहाँ खो जाते हैं!

कागज़ कलम सियाही मेरी,
उसके पास हथौड़ी थी!
छैनी फूल पराग बनाती,
नजर कहाँ तक पैनी थी!

पत्थर को भी पिघला डाला,
तब सब कुछ ढल पाया था!
छिलके जैसे पत्थर छीला,
तब गोला बन पाया था!

चला जा रहा वही काफ़िला,
बड़े शहर या छोटे गाँव!
अगर हो सके तो अब दे दो,
उन बे नाम को भी नाम!

शातिर यार

वो कहते दरिया दिल हैं,
मगर भंवर से डरते हैं!
ख्वाव समंदर के देखें
पतवार की बातें करते हैं!

जिक्र करें हर मसले पर,
अपने मंसूबे छुपा रखें!
नाव डुबा कर साहिल पर,
मझधार की बातें करते हैं!

हैं हाजिर हर महफिल में,
अपने घर बंदिश ताले!
शक्ल न देखें शीशे में,
इजहार की बातें करते हैं!

करते है बात क़यामत की,
इल्जाम नदी नालों पर है!
बूंद न डालें प्याले में,
मयखार की बातें करते हैं!

बूंद किसी को बक्श भी दें,
शहर में शोर मचा डालें!
खैरात में जख्म दिए सब को,
बीमार की बातें करते हैं!

कुछ बात करें कुछ चाल चलें,
मगर इरादे और ही हैं!
नहीं दिल की ख़बर खुदा को भी,
अख़बार की बातें करते हैं!

रंग में भंग मिला कर वो,
घर घर धूल उड़ाते हैं,
सब झूठा शोर शराबा है,
झंकार की बातें करते हैं!

होंगे रुख्सत जब दुनिया से,
दुनिया होगी दुविधा में!
मतलब से यार बनाते हैं,
ग़मख्वार की बातें करते हैं!

मजबूर वो अपनी आदत से,
दस्तूर न दुनिया बदलेगी!
प्यार के लेप लगाते हैं
तकरार की बातें करते हैं!

जे. पी. यार पुराना है,
छुप न सकेगा राज कोई!
सच से रिश्ता है अपना
उस यार की बातें करते हैं!

महक

हवा में घुलती महक जो आई,
छाई काली घोर घटा!
हम को इस का राज न मालुम,
क्यों लहरों में शोर भरा!

आज हमारे दिल में ली है,
अर्मानों ने अगड़ाई!
तेरे आने की आहट पा,
देखो घोर घटा छाई!

दिल की धड़कन तेज है कितनी,
देनी होगी आज दवा!
हवा में घुलती महक जो आई,
छाई काली घोर घटा!

उधर तड़पती बिजली देखो,
इधर गरजते बादल हैं!
भीगा भीगा सा मौसम है,
परवाने भी पागल हैं!

इधर जलेगी एक शमा,
देंगे सारे जान लुटा!
हवा में घुलती महक जो आई,
छाई काली घोर घटा!

युवा स्वप्न

उम्र युवा है स्वप्न बसंती,
नाच रहा मन मोर कोई!
उम्मीदों को पंख लगे हैं,
मगर न पाए छोर कोई!

पास ही रहना दूर न जाना,
चेहरे से आँचल न हटा!
हवा में घुलती महक जो आई,
छाई काली घोर घटा!

आज की बात जरा बन जाए,
कल की बात खुदा जाने!
फिर भी कसम उठाई हमने,
छलक न जाऐं पैमाने!

मान भी जाओ बात हमारी,
बात को यूँ आगे न बड़ा!
हवा में घुलती महक जो,
आई छाई काली घोर घटा!

नजर न लग जाए भवरों की,
चेहरे पर लो जुल्फें गिरा!
होंठ तुम्हारे कलियों से हैं,
भवरों का है हाल बुरा!

दो कलियों के बीच छुपी है,
किरणों सी मासूम छटा!
हवा में घुलती महक जो,
आई छाई काली घोर घटा!

प्रश्न चिन्ह

रखो जी याद कहा जो कल,
मिलैंगे कब ऐसे कुछ पल!
जहाँ हो केवल प्यार ही प्यार,
किसी की ना हो जीत या हार!

न होगा भार किसी सर पर,
रहेंगे लोग सभी मिल कर!
रहेगा अब रिश्तों मैं प्यार,
बनेगा कब ऐसा संसार!

प्रेम का होगा बस आँचल,
मगर है ये कैसी हलचल!

धरा को स्वर्ग बनाना था,
हुईं जो मौत बहाना था!
चैन की नींद सभी की हो
दिलों मैं प्रीत सभी की हो!

प्रेम से पत्थर जाए पिघल,
आज क्यों हाथ रहे हो मल!

न होगी मजहब की दीवार,
न होगा मन का रोग विकार!
घृणा का रोग नहीं होगा,
ग़लत का बोध नहीं होगा!

अभी भी है बातों मैं छल,
अभी है नफरत का दल दल!

ज्ञान का बोलो दीप जला,
देश का कितना हुआ भला!
युगों से यही कहानी है,
पुरानी बात पुरानी है!

घृणा का बड़ता जाता तल,
बह गया कितना गंगा जल!

अधूरे स्वप्न रहे सारे,
दरस से नैन हुए न्यारे!
खाइया हर दिन बढ़ती है,
दूरियाँ सीढ़ी चड़ती हैं

आदमी रहता बड़ा विकल!

सत्य को झुठलाते है लोग,
भयंकर कितना भ्रम का रोग!
प्रियतमा सुनो हमारी बात,
युगों से झेले कितने घात!

समस्या इतनी नहीं सरल।

सुबह अब होने वाली है,
रात अब सोने वाली है!
धैर्य रख आएगा वो कल,
समय का चक्र नहीं निश्चल!

रखो जी याद कहा जो कल,
मिलेंगे कब ऐसे कुछ पल!
जहाँ हो केवल प्यार ही प्यार,
किसीकी ना हो जीत या हार!

दो रास्ते

उल्टे हैं रस्ते हैं टेड़ी निगाहें,
मुसाफिर तू मंजिल को पाएगा कैसे!
होंठों पै कुछ और दिल में है कुछ,
उससे हकीकत छुपाएगा कैसे!

बिछाता रहा जाल बनकर शिकारी,
बनाता रहा खेल बनकर खिलाड़ी!
कभी चाल चलकर कभी पैतरे से,
रहा दौड़ में भी तू सबसे अगाड़ी!

यहां पर ज़मी है वहाँ कुछ नहीं है,
वहाँ जाल अपना बिछाएगा कैसे!

बड़े सूरमा थे जो कातिल लुटेरे,
छाए ज़मीं पर जो बनकर अंधेरे!
जो सूरज उगा तो कहाँ खोगए वो,
कहाँ उड़ गए थे जो बादल घनेरे!

नहीं पेश चलती वहाँ पर किसी की,
वहाँ दाँव अपना चलाएगा कैसे!

ना साम या दाम ना दंड ना भेद,
उसके जहाँ में ना पाया अभी छेद!
समतल है सबकुछ दिखता नहीं कुछ,
वापस न आया बताने कोई कुछ!

बस फैशला है तकरीर कैसी,
वहाँ अपना दामन बचाएगा कैसे!

दो रास्ते हैं यहाँ ज़िंदगी के,
दो रास्ते हैं यहाँ बंदगी के!
जिओ चैन से और जीने दो सबको,
सताना न कोई मना लेना रब को!

अगर हाथ थामा है तूने किसी का,
उससे कहीं दूर जाएगा कैसे!

सीधे है रस्ते चल जा तू हसते,
जैसे ये तारे सभी को हैं प्यारे!
मौसम के हैं मेघ खुल कर बरसते,
रहते हैं कुछ लोग फिर भी तरसते!

दिल में जहाँ को बसाएगा कैसे,
मुसाफिर तू मंजिल को पाएगा कैसे!

अंजाम

वजह जो भी रही होगी,
ये दुनियाँ कब सही होगी!
कभी कण कण मिला होगा,
कभी हर अणु हिला होगा!

कोई तो सिल सिला होगा,
कभी गुलशन खिला होगा!
परिंदे उड़ रहे होंगे,
तो पत्ते झड़े रहे होंगे!

मिलन की प्यास भी होगी,
वजह कुछ खास ही होगी!
जुदाई हो ही जाती है,
दुनियाँ खो ही जाती है!

ये बनती है बिगड़ती है,
कभी परवान चढ़ती है!
न जाने क्यों मगर दुनिया,
यहां हर पल झगड़ती है

नजर उसकी तो रहती है,
जहाँ के सब नजारों पर!
खबर लगती नहीं उसकी,
नचाता है इशारों पर!

मिटाने पर तुला है क्यों,
वो ख़ंजर ही उठाता क्यों!
मिटाना चाहता है क्या,
बनाने का पता है क्या!

डोली कल उठी उसकी,
नजर डालो कहारों पर!
इशारा कर रहा हूँ मैं,
यहाँ बन ती दरारों पर!

ज़मी उसकी चमन उसका,
बहारें और पतझड़ भी!
फ़ितरत आदमी की ही,
यहाँ करती है गड़बड़ सी!

यहाँ अंजाम होगा क्या,
अगर उससे ठनी होगी!
शिकारी खुल के आऐंगे,
निशाना फिर लगाऐं!

मसला दूध का ही है,
नज़र आती दही होगी!
वजह कोई रही होगी,
ये दुनिया कब सही होगी!

वादा

दिल में दीप जलाए तेरे नाम के,
बदले कितने रंग सवेरे शाम के!
लगता चाँद सुहाना पहले से जादा,
रहे चाँदनी साथ करो हमसे वादा!

अगर दीप हैं आप रहूँगी मैं बाती,
जीवन पथ पर साथ चलूँगी मैं साथी!
रहे उजाला पथ पर पूरा या आधा,
रहे चाँदनी साथ करो हम से वादा!

रितु आऐं या जाइं यहाँ सब होना है,
हो सुख दुख की बात सदां क्यों रोना है!
हँसते गाते रहें न कोई हो बाधा,
रहे चाँदनी साथ करो हम से वादा!

कभी चाँदनी रात अंधेरी रातें हों,
सदां दिलों के बीच मधुर तम यादें हों!
हुए कभी वाचल मौन व्रत हो साधा,
रहे चाँदनी साथ करो हम से वादा!

आप धरा हैं धैर्य सदां धारण करना,
अगर हों हवा तेज सदां इससे बचना!
मेरा यह अस्तित्व तुम्हारा है वादा,
रहे चाँदनी साथ करो हम से वादा!

अदृश्य भले हों मगर प्रेम के हों धागे,
विस्मृत ना हो सकें कभी सोए जागे!
हो जब सह अस्तित्व मिले तब सुख जादा,
रहे चाँदनी साथ करो हम से वादा!

बेरंग

बहारों में अब क्यों असर वो नहीं है,
अपनों की अब क्यों नज़र वो नहीं है!
कभी इस हवा में महक सी घुली थी,
वो गलियां नहीं हैं शहर वो नहीं है!

जाना कहाँ था कहाँ आगए हैं,
पता तो सही है घर वो नहीं है!
हो यार घर पर तो उसको बुलादो,
इशारे में दी है खबर वो नहीं है!

शजर पर बसे हैं ये कैसे परिंदे,
नहीं वो चहक है बसर वो नहीं है!
हक़ दार हैं सब है गर्ज का फर्ज,
हो कब्र तक सब पर वो नहीं है!

यहाँ अब मुहब्बत का रंग बे असर है,
हैं साथ सब हम सफ़र वो नहीं है!
हैं हमको मिटाने भवर बहुत सारे
दिल को जो भाए लहर वो नहीं है!

असर मौसम का

हर मौसम की अलग कहानी,
हर मौसम का असर अलग!
दिल का हाल बयां करती हैं,
खुली आँख या बंद पलक!

कहाँ कहाँ पर बरसे बादल,
किस पर आज गिरी बिजली!
असर दिखाई दे ज़ाता है,
आह या वाह कहाँ निकली!

किस के दिल में हूक उठी है,
दिख जाए वो एक झलक!

है बे असर लगन दुनियाँ की,
जो उस लगन में मगन नहीं!
अगर परिंदे चहक न पाए,
है वीराना चमन नहीं!

सागर प्यास बुझा ना पाए,
सूखे रहते होंठ हलक!

अपने दिल का हाल पता है,
उसके दिल की वो जाने!
हवा के झोंके की आहट को
प्रियतम जैसा भी माने!

बेचौनी भ्रम और बढ़ाए,
जैसे धरती और फलक!

मौसम के आने से पहले,
दिल का शाज सजालूँ मैं!
पूरी मस्ती तभी चढ़ेगी,
हर सुर ताल मिलालूं मैं!

बाईं आँख इशारा करती,
पल्लू जाता और ढलक!
दिल का हाल बयां करती हैं,
खुली आँख और बंद पलक!

मशाल

जो किसी का घर जलाने को जलीं हैं,
चाह मुझ को उन मशालों की नहीं है!
स्वार्थ में ही क्रांति की जो बात करते,
चाह मुझ को उन सवालों की नहीं है!

हो न पाया जब भला इंसान का ही,
और जो विध्वंस में विश्वास करते!
वो अंधेरों के पुजारी स्वार्थ हित में,
घ्रणित कर्मों का नहीं आभास करते!

युग युगों से धर्म जीने की कला है,
आज भी चाहत बवालों की नहीं है!
स्वार्थ मैं ही क्रांति जो बात करते,
चाह मुझको उन सवालों की नहीं है!

रक्त रंजित कर रहे जो धरा को,
हवन कुंड में एक दिन वो भी जलेंगे!
अंत उन का है सुनिशच्चित नियति से ही,
निज कर्म की उठती लपट को भी सहेंगे!

श्रजन सारा दईव का ही पुन्य फल है,
ये चमत्तकारी दलालों की नहीं है!
स्वार्थ मैं ही क्रांति की जो बात करते,
चाह मुझको उन सवालों की नहीं है!

भाव और मन

मन भावन जग होइ सुहावन,
ज्यों विरहन घर आए साजन!
उर्वर भूमि सजे हरियाली,
लोभी लाख खजाना खाली!

एकाकी मन कहाँ हैं मेले,
झगड़ालू संग कोई न खेले!
सूल चुभाती हँसी ठिठोली,
कपटी बोले मीठी बोली!

मन के हारे जीत न कोई,
विपति काल में मीत न होई।
जो मन देखे नयन दिखावें
क्यों बसंत में फूल न भावें

रहे पुलक मन जतन वही हो,
क्यों फिर तीखी बात कहीं हो!
हँस बोलो या मौन भला है,
छल ने खुद को आप छला है!

खुशी जो चाहे खुशी ही बाटे,
बोए फूल मिलें नहीं कांटे!
यह संभव नहीं पड़े दिखाई,
मित्र भाव सम भाव न भाई!

चित्त चोर हो ना आराधन,
मन भावन जग होइ सुहावना।

रक्षाबंधन

(बंधन कच्चे धागों का)

घर घर बहनें थाल सजाऐं,
भाई आशा दीप जलाऐं!
कच्चे धागे पक्का बंधन,
भाई तोड़ नहीं पाऐं!

मन के भावों की है भोर,
जिसका कोई ओर न छोर!
पास हो बहना दूर हो चाहे,
लगा नाचने मन का मोर!

मांथे पर टीका लगते ही,
बहते सागर थम जाऐं!

बहनें मागें रोज दुआऐं,
भईया जाए सौ के पार!
देख कलाई भाई सोचे,
दूँ बहना को सब संसार!

फूल भरा पथ हो बहना का,
राह में शूल नहीं आऐं!

आँखों से एक बूंद न टपके,
हों बस खुशियाँ बहना द्वार!
चाँद सितारे हों झोली में,
हों दरवाजे वंदनवार!

भईया तन से पास न चाहे,
मन से छोड़ कहाँ पाऐं!

सारे रिश्ते नाते जग के,
माना फूल हैं उपवन के!
बहना के बिन जग सूना है,
रंग न महकें जीवन के!

सजी रहे बिंदिया माथे पर,
मंगल गीत सदां गाऐं!

मित्र

दुनियाँ रोके फिर भी कोई,
खींच रहा है डोर!
यार मेरे को नींद न आई,
देर से आई भोर!

था मुश्किल उठ पाना,
अगड़ाई का अड़ जाना!
गाई क्यों कोयलिया,
आज अंधेरे ही गाना!

खाट जकड़ ना पाई,
मुझे को लाख लगाया जोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

घर आके घबराना,
पैर से बर्तन टकराना!
मंम्मी का फिर ताना,
आखों आँखों बतियाना!

खिचे कान को फिर सहलाए,
मंम्मी का चित चोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

देर से कक्षा में जाना,
यार से आँखें टकराना!
यार की खातिर पिटजाना,
यार मेरा था दीवाना!

चुपके चुपके बाग में,
घुसना फिर माली का शोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

दिल के राज बड़े गहरे,
लाख लगाते सब पहरे!
यार को दिल का हाल पता,
शब्द जुबां पर ही ठहरे!

राज न खोले कुछ ना,
बोले लाख लगाले जोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

झगड़े झंझट होते थे,
एक ही खाट पै सोते थे!
बोते थे सपने कल के,
शायद ही सच होते थे!

रोज बहाने यहाँ वहाँ के,
जिनका ओर न छोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

महल नए कुछ सपनों के,
होश उड़ाए अपनों के!
दो पैसों में ऐश बड़ी,
स्वाद चबैना चखनों के!

पड़ने लिखने की बातों पर,
था पापा का जोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

यार का मतलब यारी से,
दूर थे दुनियादारी से!
गुल्ली डंडे खेल कबड्डी,
छूटे नकद उधारी से!

बीता बचपन याद जो,
आए नाचे मन का मोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से जागी भोर!

माना जीवन जीना है,
कुछ काटा कुछ सीना है!
साल के ऊपर भी भारी,
केवल एक महीना है!

जब भी आए याद आज,
भी घिरी घटा घनघोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

सांसें आती जाती हैं,
फिर भी यादें भाती हैं!
उठती यादों की लहरें,
दिल की प्यास बड़ाती हैं!

यार बिना पथ सूना सूना,
आया अंतिम छोर!
यार मेरे को नींद न,
आई देर से आई भोर!

चंद्रयान 3

जाने वाले दूर गगन में,
चाँद को जाकर बतलाना।
कैसी है इंसान की नीयत,
तू बातों में मत आना।

तेरे दाग दिखाई देते,
इनके दिल के दाग छुपे।
करके भरोसा आपस में ही,
कितने ही इंसान लुटे।

उसका नाता है कुछ मुझ से,
उसको जाकर समझाना।

चीर के सीना पर्वत जंगल,
सागर खाली कर डाला।
फूलों की बदली है खुशबू,
टूटी है मन की माला।

भोले-भाले लोगों को तो,
पड़ता है धोखा खाना।

जब जब उड़ते स्वेत पखेरू,
बादल काले घिर आते।
प्रेम प्यार के सारे किस्से,
दीवारों में दब जाते।

ज़्यादा तर का हाल बुरा है,
किस किस को है समझाना।

जितने भोजन धरती देती,
उतनी इन की भूख नहीं।
मानव में दानव आ बैठा,
कहता कोई चूक नहीं।

तू भोला है सहज है इनका,
बस बातों में उलझाना।

दूर से देख तुझे मैं अपने,
दिल को तसल्ली देती हूँ।
भरी गोद अंबर की पाकर,
दिल को खुश कर लेती हूँ।

बम बारूद की आग में मुझको,
पड़ सकता है जल जाना।

ले जा तू संदेशा मेरा,
मैं देती हूँ लाख दुआ।
सारा हाल बताना उसको,
कब क्या मेरे साथ हुआ।

बस इतना समझाना उसको,
इन से धोखा मत खाना।

भेज दिया है साथ तिरंगा,
तू उसको पहचान सके।
है प्रज्ञान मेरा पहचाना,
तू भी अपना मान उसे।

भारत भूमि सदा से पावन,
हरता भार तभी कान्हा।
जाने वाले दूर गगन में,
चाँद को जाकर बतलाना।

गीत जो राहें भूल गए

जब कविता पाती पक्षपात दर्बारों में,
बे कफ़न दुधमुहे गीत दफ्न हो जाते हैं।
जब बे सुर वीना कहीं सुनाई दे,
रश्मी सुर लय ताल धरा पर छाते हैं।

जिन गीतों में धूप चाँदनी रहती है,
तान वही जो सुख दुःख सारा कहती है।
बिकते हैं जब गीत खुले बाज़ारों मे,
तब महफ़िल की शान घिरी अधियारों में।

देर रात को गीत याद कुछ आते हैं,
बेकफन दुधुमुहे गीत दफ़्न हो जाते हैं।

मस्ती जिस पर हवा निछावर होती हो,
सरगम जिस पर रात नींद भर सोती हो।
किरणों के संग राग सुनाई देते हैं,
मुरली राधा कृष्ण दिखाई देते हैं।

वीराने भी मीत चमन हो जाते हैं,
बे कफ़न दुधमुहे गीत दफ़्न हो जाते हें।

दो पाटों के बीच भूख की चक्की है,
आदर्शों के साथ कामना सच्ची है।
जब होती नीलाम लेखनी देखी है,
तब सद्भावों सत्य कामना बेची है।

जब लहरों पर माँझी तान सुनाते हैं,
बेकफ्न दुधमुहे गीत दफ़्न हो जाते हैं।
जब कविता पाती पक्षपात दर्बारों में,
बे कफ़न दुधुमुंहे गीत दफ़्न हो जाते हैं।

ला इलाज

शानो शौक़त पाकर यारो,
हो ही जाता है गुरूर!
तुम ये मानो या ना मानो,
चढ़ता जाता है शुरूर!

यूँ तो कितनी बार यहाँ,
व्यर्थ का शोर सराब था!
लेकिन कुछ तो कभी न सीखे,
कुछ सच कहना और शऊर!

बिन पिए ही सिर्फ़ बहकना,
ये अन्दाज़ ग़ज़ब का है!
दिखते दाग सभी चहरों पर,
आप महज़ जन्नत की हूर!

बे बाक़ी से किया तफ़्सरा,
सिर्फ़ फ़िज़ूली बातों का!
सोच से बाहर की बातें हैं,
और ख़यालों से भी दूर!

ला इलाज है मर्ज़ कई का,
दवा न कोई अभी बनी!
झूठे ताली ठोक रहे हैं,
मगर सचाई कोसों दूर!

जो भी चाहा सो कह डाला
ये तो अच्छी बात नहीं,
बात वतन की इ़ज्जत सब
की कुछ तो सोचो आप हुजूर।

घबराता जे.पी. रहता है
होंठों पर है ख़ामोशी,
पहली पहली बार ही देखा
रात के चेहरे पर है नूर।

शिक्षक दिवस

गुरु बिन ज्ञान कहाँ से आवै,
अंदर बाहर घोर घिरा तम!
गुरु ही ज्योति जरावै,
गुरु बिन ज्ञान कहाँ से आवै!

नयन ज्योति छाया अधियारा,
रस्सी सांप बतावै!
ज्ञान ज्योति तम दूर भगावै,
सत्य कौ दरस करावै!

आग न जानू ताप न जानू,
नाहक हाथ जरावै!
मात पिता गुरु हों रखवारे,
बालक मन हारसावै!

ना जग झूंठा ना जग सांचा,
भेद अभेद बातावै!
योग क्रिया और ज्ञान ध्यान सब,
गुरु बिन कोहू न पावै!

पग पग अलख लखावै जग में,
भोग में जोग जगावै!
बिन बैराग बनैं बैरागी,
सहज समाधि सिखावै!

धन दौलत और कुटम कबीला,
नाहक तन लिपटावे!
ज्यों चंदन विष असर न लावै,
अमृत रस वरसावै!

नयन न देखै कान सुनै ना,
पत्थर कंचन पावै!
हीरा जनम गंवा पछतावै,
हाथ पसारे जावै!

जनम जनम मन कागा उड़ि उड़ि,
बैठ मुंड़ेर न पावै!
रामा नंदी नाम न भावै,
पुनि पुनि जनम गवावै!

या कलिकाल भंवर बहुतेरे,
बिन थल बाग लगावै!
राम नाम गुरु नाव बनाई,
सहज जनम तरि जावै!

सतगुरु साथ रहे निशिवासर,
मन कंचन होइ जावै!
राम नाम की सुरसरि के तट,
मल मल रोज नहावै!

भजि गोविंदम् भज गोपाला,
नित चित कूँ समझावै!
हरी नाथ सारे जग के हैं,
श्रद्धा सुमन चढ़ावै!

शहीदों को नमन

आजादी की असली कीमत,
पता नहीं किस किस ने जानी!
भूल चुके हैं जाने कितने,
बलिदानों की अमर कहानी!

आजादी के हवन कुंड में,
किसने दी कितनी कुर्बानी!
कितनी गोद हुईं थी सूनी,
कितनी लुटगईं पाक जवानीं!

कितनीं उजड़ी मांगैं बिलखीं,
सूख गया आँखों का पानीं!
होश गंवाए पिता अनेकों,
अनगिन घर की ख़त्म कहानी!

जिनके कारण भारत माँ ने,
सदियों तक जंजीरैं झेलीं!
जिनके कारण सीनों पर,
बारूदी गोली आ खेलीं!

अभी तलक वो विष के वंशज,
फल और फूल रहे हैं घर मैं!
अभी तलक वो सांप सपोले,
नाच रहे हैं फिर आँगन में!

अभी शहीदों के कुछ सपने,
पड़े हुए हैं धूल कणों में!
मिट्टी पूछ रही है सबसे,
फिरसे जाकर उन्हीं क्षणों में!

सभी शहीदों को हैं मेरे,
सारे श्रद्धा सुमन समर्पित!
लज्जा का पानी है स्याई,
कलम भी दर्द सुनाने आई!

नफरत की सारी जंजीरें,
धीरे धीरे टूट रहीं हैं!
अब भी श्वेत सभी पन्नों से,
काली स्याही छूट रहीं हैं!

धीरे धीरे सागर तल से,
सत्य स्वयं उठ आता है!
लेकिन शैतानीं लोगों का,
भंवर लपेटे ही जाता है!

सत्य सवारी कर लहरों की,
स्वयं उजागर हो जाएगा!
गद्दारों का नाम निशां अब,
धीरे धीरे खो जाएगा!

भारत माँ के शिला लेख में,
बालिदानों का रंग भरा है!
मिट्टी की खुशबू है इसमें,
झंडा अंबर तक फहरा है!

हर दिन आग जली सीने में,
पड़ती है हर रोज बुझानी!
भूल चुके हैं जाने कितने,
बलिदानों की अमर कहानीं!

बिस्मिल श्रद्धा सुमन समर्पित,
भारत वाशी हैं उत्सर्जित!
जब तक भारत है धरती पर,
कर न सकेंगे तुम्हैं विसर्जित!

भारत माता ने पाए थे,
कैसे कैसे सुत बलिदानी!
भूल चुके हैं जाने कितने,
बलिदानों की अमर कहानीं!

इंसान या शैतान

बसाने से पहले कहीं दिल की दुनिया,
उसने कोई बुत बनाया तो होगा!
चले हैं मिटाने यहाँ ज़िन्दगी को,
उसे पाठ उल्टा पढाया तो होगा!
मिट्टी के खिलोने हैं प्यारे हैं सलोंने हैं,
जाने कैसी आग में जल कर हो जाते पाषाण!
मिट्टी है अलग कैसी बुतों में है महक जैसी,
दुनियाँ में खुशबू फैलाकर लेते हैं निर्वाण!

भरी राम जी ने जब चाबी दौड़े इधर उधर,
कभी राह फूलों की पाई या काटों का डर!
लगा सजाने कोई सपने और बनाए घर,
समझ न आया वही खिलौना क्यों टक राता सर।
जो दुनियाँ एक नई बसाने करते नव नीर्माण,
जाने कैसी आग में जलकर होजाते पाषाण!

जितनी नजर घुमा कर देखो पाओगे मिट्टी,
जंजाली सोना पिघला घर लाओगे मिट्टी!
जिस दिन तुम अनजान नगर से पाओगे चिठ्ठी,
जो पाया सामान गया हो जाओगे मिट्टी!

संवेदन को स्वयं भुला कर हो जाते निस्प्राण,
जाने कैसी आग में जल कर हो जाते पाषाण!

मिट्टी के पुतलों में आ कर बैठा था भगवान,
कुछ अंधे बहरे लोगों को हो न सकी पहचान!
लगे बेचने अंधे बहरे लोगों को ईमान,
मुझको लगता उसका है ये सारा खेल विधान!

वही उजाला सबके अंदर है संचालित प्राण
जाने कैसी आग में जलकर हो जाते पाषाण!

मिट्टी में शैतान जगा तो रावण कह लाया,
धर्म ध्वजा को रहा जलाता फैलाई माया!
हुआ प्रकाशित पर अंदर थी जो काली छाया,
काली छाया लुप्त हो गई दिन वो भी आया!

वंश बचा पाया ना अपना लाख चलाए बाण,
जाने कैसी आग में जलकर होजाते पाषाण!
मिट्टी के खिलोने हैं प्यारे हैं सलोने हैं,
बात पुरानी!

अजब ग़ज़ब

शोर सराबा कुछ नहीं,
बगुला ध्यांन लगाय!
ध्यानी लगता है मगन,
जाल न मछली आय!

देख दिनों के फेर को,
लोग गए चकराइ!
मस्जिद माथा टेकते,
घंटा शंख बजाय!

जनता अब हैरान है,
समझ न आया फेर!
नेताजी बगुला भए,
राम नाम की टेर!

जे.पी.अब जग से कहे,
समझो इन के फेर!
जग मैं चुनते हैं सभी,
अपने अपने बेर!

अंधेरा

निशा उगलती रोज अंधेरा,
मगर सुबह है क्यों अलसाई!
रोज सड़क पर मातम होता,
आँख किसी की फिर भर आईं!

इन सड़कों में दोष भला क्या,
आँख नींद मैं क्या देखेगी!
लालच के वाहन दौडा कर,
कितने सपनों को बेचेगी!

मौसम की वर्षात हुई तो,
धरती निगल गई मानव को!
कितने वर्षो तक पूजेंगे
लापरवाही के दानव को!

कहीं खुली बिजली का खतरा,
नालों में कूड़ा आ पसरा!
झंडा तो अंबर तक फहरा,
प्रश्न धरातल पर है गहरा!

आगे बढ़ने का प्रण अच्छा,
मगर धरा की धूल हटाओ!
अच्छा है आगे को बड़ना,
ज़िम्मेदारी और निभओ!

प्रेम

जब लिख मैं गति कोई,
साथ में हो मीत कोई!
मैं न चाहूँ जीत कोई,
मैं न चाहूँ रीत कोई!

एक ही व्रत साधना है,
प्रेम तो आराधना है!

संग भी है रंग भी है,
ये अनौखा ढंग भी है!
है खुला आकाश सारा,
ये गली कुछ तंग भी है!

बस यहीं एक कामना है,
प्रेम तो आराधना है!

अब कभी नीरस न हों,
ये प्रेम पूरित शब्द मेरे!
हैं यही शास्वत जगत में,
अब न हों अंजान घेरे!

प्रेम की हो चाहना है,
प्रेम तो आराधना है!

जब पुलक अहसास होगा,
तब सतत विस्वास होगा!
इस जगत से उस जगत तक,
प्रमे का अहसास होगा!

राह में कोहरा घना है,
प्रेम तो आराधना है!

लहर सागर की निनादित,
हो रहेगा सब प्रवाहित!
झील में है मौन पल्वित!
मोंन में है कौन कल्पित,

जानकर भी अनमना है!
प्रेम तो आराधना है।

भाब मय रस घुल रहा है,
मैं न जानूँ किस विरह में!
एक मधुरिम रागिनी ही,
हो रही झंकृत हृदय में!

आज किस से सामना,
प्रेम तो आराधना है!

कुछ नहीं इसमें ठिकाना,
दर्द की गहराइयों का!
कंटकों में सुख मिला है,
आम की अमराइयों का!

अब समंदर लाघना है,
प्रमे तो आराधना है!

ले समाधी लीन रहना,
इस जगत से कुछ न कहना!
प्रेम की माला पिरोना,
साथ हो तन मन भिगोना

प्रेम में कब वासना है,
प्रेम तो आराधना है!

हिंदीं

भावों की अभिव्यक्ति मेरी है हिंदी में,
बड़ी कल्पना शक्ति भरी है हिंदी में।
अदृश्य भाव जब बूँदे बन कर झरतै हैं,
स्वेत पत्र पर कितने चित्र उभरते हैं।

करुणा व्यथा व्यंग क्रोध अभिव्यक्ति बने
बने बासुरी तान प्रेम के मेघ घने।
मिले व्याकरण ज्ञान करो माँ अनुकम्पा,
मिटें सभी व्यवधान मिटे माँ हर शंका।

शब्द ब्रह्म के साथ नाद साकार हुआ,
त्रिगुण हुआ आधार ऊँ कार हुआ।
दसों दिशा में व्याप्त रहा व्याप्त जो कण कण में,
मिली यहाँ गज मोक्ष दीन को एक क्षण में।

राम चरित गुण गान हरे जो तम मन का,
राम नाम एक शब्द रोग काटे तन का।
मिटे सभी व्यवधान मिटे माँ हर शंका।
हो भाव शब्द विज्ञान करो माँ अनुकंपा

सुजान भए मति मंद कृपा तेरी पाई,
देख क्रोंच के अश्रु व्यथा आकृति लाई।
लगे लगन मन ध्यान भक्ति है हिंदी में,
भावों की अभिव्यक्ति मेरी है हिंदी मैं।

देश राग

बात बात पर यूँ टकराना ठीक नहीं,
हक़दारों के हक़ को खाना ठीक नहीं।
माना हर घर में बर्तन टकराते हैं,
टकराने का सिर्फ़ बहाना ठीक नहीं।

इस उम्र में बस इक बार जवानी आती है,
दरिया जैसे बहते जाना ठीक नहीं।
जाने कितने मौसम गुजर गए पहले,
आखें मूँदे चुप रह जाना ठीक नहीं।

हो सके तो हर साजिद को नाकाम करो,
हर बार किसी से धोखा खाना ठीक नहीं।
है बाजों के साथ किसी का याराना,
घर के अंदर ये मयखाना ठीक नहीं।

खोल रहीं हैं खिड़की खुली दरारें अब,
आज मरम्मत ना हो पाना ठीक नहीं।
शौक़ बड़ा है अपना मिलने जुलने का,
सब लोगों को घर पर लाना ठीक नहीं।

बस वोटों की ख़ातिर सिर्फ़ सियासत है,
हर दिन घर में ही सो जाना ठीक नहीं।
अब कोंन शिकारी कोंन बचाने वाला है,
जानबूझ कर ज़हर पचाना ठीक नहीं।

जो शातिर हैं अपनी दाल पकाएँगे,
पानी से ये आग बुझाना ठीक नहीं।
जो बोएगा फसल वही तो काटेगा,
खेतों से अब बाड़ हटाना ठीक नहीं।

सबके चेहरे साफ़ नज़र खुद आते है,
जानबूझकर नज़र घुमाना ठीक नहीं।
है जे.पी. नादान इशारे करता है,
नाटक से धोखा अब खाना ठीक नहीं!

आँखों देखी

(एक व्यंग रचना)

सर के ऊपर मेघा बरसे,
प्यास बुझाए बूँद न पानी।
क्या करना है पोथी पड़के,
जो दुनियाँ की एक न मानी।

पीकर ज्ञान बखारें सारे,
ना समझा रे ज्ञान की गीता।
उलझन सुलझन छोड़ बावले,
मजा न आता कभी न पीता।

अंदर लहर हिलोरें मारें,
रोके कौन हवा तूफ़ानी।

हाथ पसारे आए नेता,
चाह रहे सब बनें विजेता।
आजू बाजू दस दस चमचे,
कंधों पर हैं सर के गमछे।

सोच समझ कर दबे अंगूठा,
याद न आए बाद में नानी।

हाथ में हुक्का चले चौधरी,
बादामों में मिलीं कौमरी।
घर बैठे ही फसल पक रही,
जाम सड़क पर धूप जलरही।

चौथ चढ़ाकर चले शिकारी,
जाकर खूब करो मनमानी।

तुम समझौता कभी न करना,
होजाएगी कुट्टी वरना।
मिट्टी की सौगंध है तुमको,
आप से ज्यादा कौन है ज्ञानी।

आने दो सरकारी अमला,
करो किसानी तोड़ो गमला।

टैक्क्टर लेकर करो किसानी,
झुंड बने मिलकर तूफ़ानी।
जेब गरम हो सत्य यही है,
श्रम भी है और कृत्य यही है।

मिलकर सत्ता वापस लाओ,
भीड़ भले भटके अकुलानी।

मंदिर झूँठा मस्जिद सच्ची,
कभी न खेलो गोटी कच्ची।
डूडो ठेकेदार कहाँ हैं,
अभी तो बाक़ी जंग यहाँ है।

अब सारे गठबंधन करलो,
भूलो सारी बात पुरानी।

काले कोट न सर पर टोपी,
चतुर चलाक हो चमड़ी मोटी।
दाव पेच का जो माहिर हो,
जो सैटिंग़ में जग ज़ाहिर हो।

किसी भाव बस लाओ उसको,
आती जिसको गोट बिठानी।

सच्चा ज्ञान कहाँ तक गाऊँ,
ना में दो की चार सुनाऊँ।
मुश्किल डूबी नाव चलानी,
आए कौन यहाँ विज्ञानी।

सर के ऊपर मेघा बरसे,
प्यास बुझाए बूंद न पानी।
क्या करना है पोथी पड़के,
जो दुनिया की बातन मानी।

हाल मेरे देश का

(एक व्यंग रचना)

शिकारी जाल बुन रहे हैं,
मदारी माल चुन रहे हैं।
परिंदे उड़ना भूल बैठे,
गलेगी दाल सुन रहे हैं।

निठल्ले अर्स को निहारें,
चमचे फर्स को बुहारें।
सपने हों सभी के पूरे,
अंधे बहरों को पुकारें।

बचाए कौन आज घर को,
दिख तो अप शकुन रहे हैं।

ये कौन किस जहाँ से,
वाक़फ़ि है नहीं यहाँ से।
जला कर घर भी ताप लेंगे,
सत्ता बिन कहाँ रहेंगे।

उगाई है फ़शल ये माना,
हमारे घर में घुन रहे हैं।

सिक्के खनकते हैं कैसे,
चलते बहुत माल पैसे।
आदत हो चुकी पुरानी,
सहेंगे फिर भले गुलामी।

भले हैं फूल जैसे काँटे,
नशे में खूब टुन रहे हैं।

भरा है पेट मूह खुला है,
पुराना यही सिलसिला है।
मिलेगा हाथ गर्ज से ही,
परेशा हैं ये मर्ज़ से भी।

बैठे शाख़ शाख़ पर हैं,
जे.पी. सर को धुन रहे हैं।
शिकारी जाल बुनरहे हैं
मदारी माल चुन रहे हैं।

चेतावनीं

मैं अनुगामीं केवल उसका,
जिसने दीप जलाकर देखा!
मगर अंधेरौं ने घर घर मैं,
जाकर आग लगाकर देखा!

जहां खत्म सूरज की सीमा,
अभी अंधेरा वहीं खड़ा है!
आँखौं वाला वही आदमीं,
आज तलक बेहोश पड़ा है!

देख चुके हैं असर जहर का,
देख चुके हैं कितनीं आग!
लेकिन हाल पुराना फिर से,
अपनीं ढ़पली अपना राग!

विषधर विष से भरे हुए हैं,
पर मौसम से डरे हुए हैं!
इंतजार है बस मौंके का,
ये न समझना मरे हुए हैं!

आने वाले कल को देखूं,
भारत के भूतल को देखूं!
चौकस रहना है रातौं को,
भूल न जाना इन बातौं को!

आने वाला वक्त बताए,
किसने कितने दीप जलाए!

फर्क न कथनी का हो,
सत्य उनागर अब हो जाए!

सब की आँखें बंद नहीं है,
अभी बड़ी है जीवन रखा!
में अनुरागी केवल उस का,
जिसने दीप जला कर देख।!

फ़ासला

जो फूल खिले हैं गुलशन में,
काटों में पलना क्या जाने।
जहाँ मौसम की मदहोशी हो,
सहरा में जलना क्या जाने।

हम दूर से चलकर आए हैं,
चेहरे पर शिकन नहीं फिर भी।
पैरों के छाले भर भी चुके,
सीधी नजर सही फिर भी।

कुछ देर मिलेगी छाव कहीं,
कुछ गीत लगेंगे हम गाने।

खैरात की चाह नहीं कोई,
ये नर्म बिछौने चुभते हैं।
हम को पथरीली राह मिली,
था नहीं चमन पर कली खिली।

माटी की महक हमी से,
पहुंचे हैं बागिया महकाने।

ये नीला आकाश यहाँ से,
साफ़ दिखाई देता है।
है सच में ये दूर बहुत,
पर पास दिखाई देता है।

ये गीत तुम्हारे प्यारे हैं,
बेबाक़ हमारे अफ़साने।

देख रहे कुछ लोग हमें,
कितनी तिरछी नज़रों से।
हर बात इशारों में करते,
बचकर रहना है ख़तरोंसे।

कुछ पहचान हमें भी है,
कोई माने या फिर ना माने।

वो दिल को दरिया कर न सके,
और हम कब रस्ते भूल गए।
हम भी हर मौसम सह लेंगे,
किस बात पै चेहरे फूल गए।

अपनी बसर है हर दिन पर,
आप सम्भालो तहखाने।

है फ़र्क़ तुम्हारी बातों में,
है फ़र्क़ हमारे मौसम का।
अंदाज़ तुम्हारे हंसने का,
है राज़ हमारे भी ग़म का।

अंदर बाहर कुछ फ़र्क़ नहीं,
और हम भी तो हैं दीवाने।
जो फूल खिले हैं गुलशन में,
काटों में पलना क्या जाने।

समझ से परे हैं राम

राम समझ कब आते हैं,
पत्थर भी तर जाते हैं।
हिम शिखरों में आग भरी,
मरुथल नीर बहाते है।

पत्थर हीरा हो जाते,
अपना वचन निभाते हैं।

हैं अनबूझ पहेली सी,
सौतन लेंगे सहेली सी।
नहीं मंथरा दंड मिला,
वन में पीढ़ा झेली थी।

कुटिया में रह जाते हैं,
राम समझ कब माते हैं।

हैं प्रत्यक्ष प्रमाण अभी,
झेले विष घर बाण सभी।
कपट कुसँग रहा रावण,
राम हरे थे प्रांढ़ तभी।

निर्बल मित्र बनाते है,
राम समझ कब आते हैं।

जलधि न छोड़े राम जड़ता को,
राम निभाऐं दृड़ता को।
भ्रमित उमा ना पहचाने,
शिव की श्रद्धा ना माने।

शिव कितना समझाते हैं,
राम समझ कब अपते हैं।

है राम कहानी अजर अमर,
अगर मगर की नहीं डगर।
राम नाम है भव तारक है,
मनसा वाचा कर्म भ्रमर।

सहज हृदय मन भाते हैं,
राम समझ कब अत हैं।

छल बल काम नहीं आते,
भक्त विभीषण बन जाते।
हिंसक दैत्य न टिक पाते,
सत मायावी भिट जाते।

कर को दंड उठाते हैं,
राम समझ कब आते है।

प्यासा सावन

याद पिया की जब आए,
बोलो सावन क्या गाए।
पवन चले तन मुर्झाए,
बोलो सावन क्या गाए।

बादर कारे हैं घनघोर,
हवा सनन सनू करती शोर।
दूर कहीं नाचत है मोर,
फिर भी प्यासा एक चकोर।

लोचन नीर भरे पाए,
बोलो सावन क्या गाए।

झर झर झर झर नीर बहे,
मन तड़पे नहीं धीर धरे।
आँगन गीला राह रुके,
बादर धरती आन झुके।

पीय मिलन को ना आए,
बोलो सावन क्या गाए।

डालन झूले झूल रहे,
बग़ियन फुलवा फूल रहे।
सखियन गीत मल्हार रुचे,
मन भावन क्यों भूल रहे।

ना अनहोनी हो जाए,
बोलो सावन क्या गाए।

सन् सन् कर के ब्यार बहे,
चमक चमक बिजुरी चमके।
घन घन घन करते बदरा,
बाईं आख अलग फड़के।

पीर उठे मन घबराए,
बोलो सावन क्या गाए।

शिकारी

चौकीदारी भारी मुस्किल,
चोर मचाए शोर यहाँ पर!
धरती प्यासी शागर खारा,
होगी खेती भला कहाँ पर।

धरती बंजर करने वाले,
फैलाते हैं धूल धरा पर!
वो कहते हैं फुल खिलाते
लोग न समझें शूल कहाँ पर!

नजर कलम सब देख रही है,
किसका है व्यापार कहाँ पर?
नजर सितारों पर अटकी है
हो जाए ना भूल यहाँ पर!

धंधे के फंदे हैं सारे,
बोलो तो आवाज़ न आती!
बाज लगाए बैठे नजरें,
पंछी की परवाज न भाती!

है अइयारी की तइयारी,
नज़र न आता छोर कहाँ पर!

छोटे क़द वाला

छोटे का किर्दार बड़ा है,
बनकर जैसे प्रश्न खड़ा है।
रब को तो है फ़िक्र सभी की,
तभी ज़मीं पर मुकुट पड़ा है।

बड़े शहंशाह आज कहाँ हैं,
महल कबूतर सभी यहाँ हैं।
सब को लूट बनाते खुद को
लोग भुला देते हैं उसको।

कदमों में इस वक्त पड़ा है,
बनकर जैसे प्रश्न खड़ा है।

कुछ ओरों की ख़ातिर जीते,
दिल से दाता जेब से रीते,
वो औरों के आँसू पीते।
ऐसे भी तो लोग कभी थे,

क्या उनसे कुछ और बड़ा है,
बनकर जैसे प्रश्न खड़ा है।

सिर्फ़ समय के कदम बड़े हैं,
कुछ बन कर दीवार अड़े हैं।
अगर न रस्ते मुड़ने वाले,
पंख न होंगे उड़ने वाले।

कुछ लोगों का एक धड़ा है,
बनकर जैसे प्रश्न खड़ा है।

बड़ता क़द उस का देखा है,
अभी बड़ी जीवन रेखा है।
जो औरों की व्यथा सहेगा,
वो जीवन पर्यन्त रहेगा।

वो बनकर स्तंभ अड़ा है,
बनकर जैसे प्रश्न खड़ा है।

गंगा कथा नारी व्यथा

देकर जीवन दान रही गंगा जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!
हरि चरणों से निकल मिला फिर से बंधन,
भक्त मुक्ति के हेतु न कोई तुम जैसी!

घर में बेटी है वरदान,
घर की होती है पहचान!
बेटी से संबंध अनेक,
ज्यों माला में धागा एक!

जिस का जैसा भाव मिली उसको वैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

प्रभु पग नख से जब निकली,
ब्रह्मम कमंडल में फिशली!
भागीरथ तप पुंण्य फला,
शीश जटाओं में उलझी!

था काशी विश्राम विवसता थी जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

फूलों की खुशबू जैसे,
चहक हो चिड़िया के जैसे!
पड़ा त्यागना घर अपना,
विधि ने लेख लिखे कैसे!

कैसा है ये दर्द दवा पाई कैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

पितरों का भी हुआ भला,
सदियों का अभिशाप भिटा।
वहीं प्रवाहित गंगा है।
दुर्लभ कितनी प्रभा छटा।

गंगासागर पहुँच हुई सागर जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

पति का यह घर अंजना,
उसको भी अपना माना!
साथ दिया हर सुख दुःख में,
जोड़ा हर ताना बाना!

कर खुशियों का त्याग सजी लक्ष्मी जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

माना युग है अन देखा,
हो द्धापर या हो त्रेता।
पाप मिटाए, गंगा घाट,
नारी जीवन नहीं सपाट।

भरी धरा पर घोर घटा छाई जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!
कलयुग बड़ता जाता है,
नारी गंगा से नाता है!

बिन नारी के पुरुष कहाँ,
कुछ को समझ न आता है!

निर्मल कल कल बहैं रहैं पावन जैसी,
है नारी की देखो व्यथा कथा कैसी!

यादों के झरोखे से

कुछ याद रहा कुछ भूल गए,
कुछ काँटे कुछ फूल रहे।
महक गुलों की बाकी है,
याद उन्हीं की आती है।

हर चुभन भुलाना अच्छा है,
धुटन का दुख कब सच्चा है।
महफ़िल है ना शाकी है,
नशा अभी तक बाकी है।

उग आई है शाख नई,
बदल गए हैं रंग कई।
जब इस ओर गुजरता हूँ,
याद वही पल करता हूँ।

बात करूँ क्या सूलों की
फसल कटी कुछ भूलों की।
उग आते है नव अंकुर
चाहे जीवन क्षण भंगुर।

है तरुणाई बेलों की,
यादे है कुछ मेलों की।
ज्योती नजर जब आती है,
रहती शीतल छाती है।

दहकूँ क्यों अंगारा सा,
भटकूँ क्यों बेचारा सा।
लहर उठी मेरे दिल की,
मिली झलक तब साहिल की।

हँसता और हँसाता चल,
अपने गीत सुनाता चल।
कब टिकते है गुजरे पल,
पैमाना छलकाता चल।

डगमग चाल न चल प्यारे,
बहते रहते है द्यारे।
मिल जो सच्चा साथी है,
कली कली खिल जाती है।

महक गुलों की आती है,
याद उन्हीं की आती है।

बचपन

छूलें चाँद पकड़लें तारे,
थे बचपन में स्वप्न हमारे।
अब वियोग का दर्द बड़ा है,
धरती को आकाश पुकारे।

भावों में विस्तार गगन का,
बचपन अपने आप मगन था।
खुशियों का भंडार बड़ा था,
तभी युवापन साथ खड़ा थ।

फूल कली के रंग है प्यारे,
सोचूं हर दिन कौन संवारे।
उड़ी कल्पना बिन पंखों के,
सुनीं गूजती ध्वनि यंत्रों से।

उधर शंख आवाज़ दे रहा,
इधर श्रजन आकार ले रहा।
उधर मौंन अदृश्य कौन है,
यहाँ धरा पर कौन मौन है।

काश कोई मुझको लौटा दे,
बीता बचपन फिर से लादे।
शक्ति व्यर्थ कर तृप्ति न पाई,
ओस सुबह नहलाने आई।

एकाकी बोझिल जीवन से,
पा न सकें सब कुछ बस धन से।
फिर भी यादों के उपवन में,
अर्थ, मिला है बस जीवन में।

नींद रात को रोज़ सुलाती,
सुबह पवन आ सिर सहलाती।
है यादों का फ़ैला आँगन,
गया न मन से अब तक बचपन।

है यादों के बहते धारे,
आई कश्ती आज किनारे।
छूलूँ चाँद पकड़ लूँ तारे,
थे बचपन में स्वपन हमारे।

लाली सवेरे वाली

बीती रात तभी आ पहुँची,
देख सवेरे की लाली।
पल्कें खोल रहीं हैं कलियाँ,
जाग जाग ओ बनमाली।

हुए विदा अब रजनी तारे,
खिली चाँदनी हुई विदा।
सबने अपना फ़र्ज निभाया,
क्या तेरा दायित्व बता।

आ पहुँचा सूरज सर ऊपर,
लेकर ज्योतिर्मय थाली।

नभ में विचरण करते हैं,
उनपर भी कुछ ध्यान लगा।
उन्हें पता है अपनी सीमा,
है युगों युगों से साथ रहा।

एक हाथ से बजी न अबतक,
दोनों हाथों की ताली।

कितना है विस्तार गगन का,
खिलता है हर एक चमन।
है अधिकार सभी का इसपर,
है कर्तव्य मगर जीवन।

कुदरत के सुंदर गुलशन की,
मानव तोड़ रहा डाली।

जब जागे हो तभी सवेरा,
अब और न हो तेरा मेरा,
आज यहाँ पर लगा है मेला,
मगर कहाँ हो कल डेरा।

है अंतिम विश्राम सभी का,
क्यों नफ़रत दिल में पाली।

बीती रात तभी आ पहुँची,
देख सवेरे की लाली।

नया सफ़र

अभी हुआ है प्यार जवाँ,
तभी खिली है धूप यहाँ।
आज नहीं है तन्हाई,
आप अभी तक रहे कहाँ।

अब लगता है चमन खिला,
था कब से ये स्वप्न पला।
है दूर दूर तक हरियाली,
कोई जगह नहीं ख़ाली।

उड़ते दूर परिंदे हैं,
बीता मौसम रोज कहाँ।

कितने मौसम निकल गए,
यार पुराने बदल गए।
अब हम तन्हा रह लेंगे,
दर्द हो जो भी सह लेंगे।

सूनी सूनी महफ़िल थी,
आज है पर रंगीन समाँ।

लोग न जानें अपना हाल,
बच कर रहना है कुछ साल।
हो जो ठीक बता देना,
तुम सर दर्द नहीं लेना।

खिलती कलियों को भँवरे,
चूम रहे हैं उधर वहाँ।

हम आज मिले दो अंजाने,
अब लगते हैं पहचाने।
इतनी देर लगी कैसे,
सब लगता है तय जैसे।

मंज़िल हम को मिल ही गई,
हो जाएगा इश्क़ रवाँ।

ये पहचान पुरानी थी,
लगता एक कहानी थी।
बचपन और बुढ़ापा था,
या भरपूर जवानी थी।

प्यार में चुभता दर्द कहाँ,
रही बदलती सिर्फ़ फ़िज़ा।

दीमक और भुजंग

हमने देखा अजब मसीहा,
जिसने उल्टा सिला दिया।
प्यार मुहब्बत सिखा न पाया,
नफ़रत करना सिखा दिया।

गहरा मर्ज़ जमाने में था,
या ख़ुदगर्ज़ मसीहा ही।
पत्थर हाथों में पकड़ा कर,
फिर दूजा घर दिखा दिया।

पहरेदारों को समझाया,
अपनी आँखें बंद रखों।
चिंगारी को और हवा दी,
लोगों का घर जला दिया।

ख़ुदगर्ज़ी का आलम हमने,
देखा कितनी बार यहाँ।
एक दूजे को उलझा कर,
अपना चेहरा छुपा लिया।

रोज़ तमाशा बाहर करते,
संसद में मैदान बना।
कर्तव्यों की बलिबेदी पर,
कभी न अच्छा काम किया।

मेरे देश की मिट्टी ने ये,
कैसी फ़सल उगाई है।
चौपट कर के भाई चारा,
अपना सिक्का जमा दिया।

डाल डाल पर कितने बैठें,
पात पात भी सूख गया।
दीमक बन कर जड़ से चिपके,
सारा गुलशन सुखा दिया।

देखें माली क्या करता है,
लिपटे हुए भुजंगों का।
खुशियों पर मातम कर वाया,
कूए में विष मिला दिया।

पिंजरा

बनाओ इक नया पिंजरा, रहें कुछ बाज पिंजरे में।
हज़ारों हैं कबूतर आज भी नासाज़ पिंजरे में।

लगा हो खून मुँह जिसके वो रोटी दाल क्यूँ खाए,
शिकारी को समझ आए, क्या हाल पिंजरे में।

खुले आज़ाद फिरते हैं जो ख़ंजर हाथ में लेकर,
भले कितना खिलाड़ी हो न चलती चाल पिंजड़े में।

यहाँ मिलकर लुटेरों ने, हुकूमत की कभी क़ायम।
घर के भेदिए सारे यहाँ हों आज पिंजड़े में।

ज़ालिम हैं शहर में अब हरकत छोड़नी होगी।
पता उन को भी लगने दो है कैसा हालु पिंजरे मेन।

शिकारी

चौकीदारी भारी मुश्किल,
चोर मचाए शोर यहाँ पर!
धरती प्यासी शागर खारा,
होगी खेती ओर कहाँ पर।

धर्ती बंजर करने वाले,
दिखलाते हैं धूल धरा पर!
वो लगते हैं फुल बिछाते
लोग न समझें शूल कहाँ पर!

नजर कलम की देख रही है,
किसका है व्यापार कहा पर?
नजर सितारों पर अटकी है,
हो जाए ना भूल वहाँ पर!

धंधे के फंदे क्या जाने,
बोलो तो आवाज़ न जाती!
बाज लगाए बैठे नजरें,
पंछी की परवाज न भाती!

नज़र अधूरी

दो आँखों से हम सारा कुछ,
देख नहीं पाते।
छुपे भाव चेहरे से सारे,
नज़र कहाँ आते।

मन की पीढ़ा दिल के छाले,
अजब ही निकले देखे भाले।
छुपी ह्रदय की आग बुझी ना,
कितने सपने हमने पाले।

साथ रहे साथी के मन का,
भेद नहीं पाते।
दो आँखों से हम सारा कुछ,
देख नहीं पाते।

गहरी चाल जहाँ होती है,
खबर किसी को कब होती है।
अंदर झरना बहता खारा,
शक्ल रुआसी तब होती है।

ग़म खुशियों के पल जीवन में,
हैं आते जाते।
दो आँखों से हम सारा कुछ,
देख नहीं पाते।

निर्बल का बल पेट की ज्वाला,
अलग अलग है मन की माला।
चलता रहता वक्त का पहिया,
पता नहीं कब डूबे नईया।

सभी तवे पर अपनी रोटी,
सेक नहीं पाते।
दो आँखों से हम सारा,
कुछ देख नहीं पाते।

कारवां

हमने क्या क्या स्वप्न सजाए,
लोग मिले कुछ और हमें!
हम उनको क्या समझ रहे थे,
वो समझे कुछ और हमें!

आतीं कैसे मस्त बहारें,
अपने उजड़े गुलशनमें!
मगर शिकारी नजर इधर थीं,
थी परवाज मगर दिल में!

मिले हवा में छुपे हुए कुछ,
तूफ़ानों के दौर हमें!

थामा हाथ उसी ने आकर,
और इरादे थे जिनके!
जितनी बार संभाला दिल को,
हुआ और तिनके तिनके!

दिल का हाल सुनाते किसको,
मिल न सका कोई और हमें!

जब जब दीप जलाए दिल में,
लगा अंधेरा छटने को!
नफरत की दीवार उठीं कुछ,
और लगा दम घुटने को!

सोच के आस का दामन थामा,
लोग कर क्यों गौर हमें!
आज कारवां आ पहुँचा है,
दूर किनारे मंजिल से!

रंज नहीं है फिर भी हम को,
मिल न सके थे साहिल से!
कुछ लहरों ने साथ निभाया,
मिला न कश्ती ठौर हमें!

अपनीं मंजिल दूर नहीं अब,
सबकी मंजिल एक वही!
सबका है बस एक ठिकाना,
चाहे राजा रंक सही!

अब आँखों में चमक अलग है,
वो करता है गौर हमें!

नहले और दहले

आप न थे पहले ऐसे,
बदल गए हो अब कैसे।
मौका पाते बदल लिया,
ठाठ नबावो के जैसे।

करते रोज़ जुगाली थे
कितने चोर मवाली थे।
टोपी आज लगाई है,
भरपूर कमाई है।

रिश्ते आज बने कैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

है सत्ता सबका सपना,
किसका साथ रहा अपना।
आगे साथ तभी तक है,
जब तक मतलब है अपना।

क्या समझें ऐसे वैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

रहा सादगी का अंदाज़,
लगते कल जैसे हो आज।
कल तक जेब रही कड़की,
बाईं आँख रही फड़की।

खूब कमाए हैं पैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

हो मतलब का बाप कोई,
बस मतलब की फसल बोई।

आख़िर सत्ता हाथ लगी,
जनता भी क्या खूब ठगी।

हैं सपने अब सच जैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

कुछ को सिर्फ़ मनाना है,
असली वोट निशाना है।
गाजर दे दो वोटर को,
फिर दूनियाँ का क्या डर हो।

वोटर भेड़ बने कैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

है उम्र अभी तरुणाई की,
खाओ दूध मलाई भी।
अब कुछ ना कुछ होना है,
नाहक काहे रोना है।

कर न सकें कुछ हम जैसे,
आप न थे पहले ऐसे।

है बहुत जरुरी गठबंधन,
होने दो हो जो क्रंदन।
आप तो खूब खिलाड़ी हैं,
लगते मगर अनाड़ी हैं।

नीम करेले एक जैसे
आप न थे पहले ऐसे।

दिल्ली है दिल वालों की

क्या कर ले कोई उसका,
शर्म से काम नहीं जिसका।
उसका कोई दोस नहीं,
बस लोगों को होश नहीं।

वोट की चोट है औरों को,
भंवर बना दे लहरों को।
बना शराबी पहरों की,

दारू धंधा है जिसका,
क्या करले कोई उसका।

हर बात पै एक बहाना है,
कहना कहाँ निभाना है।
नेता बड़ा सयांना है,
अब हर और निशाना है।

पैसा प्यार बना जिसका,
क्या करले कोई उसका।

प्यासे लोग मरें न मरें,
और के सर इल्ज़ाम धरें।
चाहे जेल में कक्का है,
उसका वोटर पक्का है।

दिल्ली में दिल है जिसका,
क्या करले कोई उसका।

भारी अजब तमाशा है,
चिकनी चुपड़ी भासा है।
टिक टिक गोल घड़ी घूमे,
अपना माथा खुद चूमे।

मुफ़्त है मंत्र सधा जिसका,
क्या करले कोई उसका।

दिल्ली है दिलवालों की,
मौज बड़ी वाचालों की।
गधे को बाप बना लेती,
जोड़ी जीजा सालों की।

दुश्मन दोस्त बना जिसका,
क्या करले कोई उसका।

पिता

हद से जादा कहीं अधिक,
वजन उठाए फिरता है!
अनचाही आई उलझन,
जो सुलझाए फिरता है!

अस्त हुआ सूरज अधियारा,
आया जाल बिछाने को।
घर मैं फैले अंधियारे में,
दीप जलाए फिरता है!

जहाँ नहीं वश चल पाया,
तारे गिनता रहता है!
सुबह सवेरे देवालय मैं,
दीप जलाए फिरता है!

उसके सपने पलते हैं,
मासूम हंसी पाने भर को!
खूब धधकती धूप में भी,
बदन जलाए फिरता है।

फूल से कोमल पैरौं को,
खुद रस्ते समझाता है!
पंचमहाभूतों की गाथा,
भी दुहराए फिरता है!

नहीं अपेक्षा पाने की,
देने मैं दिन रात गया!
हसने वाले चेहरे में,
दर्द छुपाए फिरता है!

ज्यों मिट्टी के सभी घड़े,
एकसार नहीं हो पाते हैं!
सधी हुई थपकी देकर,
दोस मिटाए फिरता है!

ईश्वर है सबका परम पिता,
रखता ध्यान सभी जन का!
रूप पिता का लेकर ही,
धर्म निभाए फिरता है!

जाने वाले पथिक कभी,
होश गंवाए मत रहना!
आने वाला कालचक्र कुछ,
अर्थ छुपाए फिरता है!

बीती यादें आई हैं फिर,
जे.पी.याद दिलाने को!
क्या समझेगा दुनियां को,
हाथ मिलाए फिरता है!

कर्म फल

जिन के दामन दाग भरे हैं वो अपना दामन धोते,
हम पत्थर हैं अचल यहाँ पत्थर के पांव नहीं होते!
कभी लगाते मुझे भवन में वहीं लगा हूँ वर्षों से,
आज पतन की बाट जोहता निकला हूँ उत्कर्षों से!

चहल पहल और शादी मेले उत्सव भी कितने देखे,
सदियों से वीरान खड़ा हूँ मेरी किस्मत के लेखे!
हमें फेंक जो घाव दे रहे उनके नाम नहीं होते,
हम पत्थर हैं अचल यहाँ पत्थर के पांव नहीं होते!

कभी लगाया देवालय में धूप दीप सब कुछ पाया,
भूप अनेकों सीस झुकाते यह सब ईश्वर की माया!
मूर्ति रूप दे दिया है मुझको पर्वत पानी सहरा में,
पुष्प बनाया वृश बनाया चिड़िया तितली भंवरा में!

स्वार्थ सिद्धि सब इंसानों की मेरा भार नहीं ढोते,
हम पत्थर हैं अचल यहाँ पत्थर के पांव नहीं होते!

हो उपयोग दुर्पयोग सब इंसानों की मर्जी है,
अगर किसी को घाव देरहे किसकी ये ख़ुदगर्ज़ी है।
कारिस्तानी इंसानों की दोस भला क्यों दो हमको,
जैसा काम किया पाएग यहाँ खुशी या फिर ग़म को

वैसा ही फल सारे पाते जैसे बीज यहाँ बोते,
हम पत्थर हैं अचल यहाँ पत्थर के पॉव नहीं होते।

बेबस

ज़िंदगी हर घड़ी में बदलती है रंग,
कभी जश्न होते कभी होते ग़म।
कल तक थे अंजान हम आप से,
अब लगता है वर्षों से वाक़िफ़ हैं हम।

कल क्या हो मुझको भरोसा नहीं,
अब क्या है इस बात पर है यक़ीं।
वर्सों के वादे में कैसे करूँ,
अगले लम्हे की मुझ को खबर कुछ नहीं।

आज है आरजू मैं बताऊँ तुम्हें,
ताउम्र तुमसे मैं बिछड़ू नही।
जबतक हो मुमकिन निभाऊँगा मैं,
आगे कुदरत पै मेरा कोई बस नहीं।

ख्वावों के पुल मैं बनाता नहीं,
झूठे वादे कोई भी निभाता नहीं।
जो हो साज टूटा तो क्या गाऊँ में,
आए तूफ़ान बोलो किधर जाऊँ मैं।

सफ़र में जो मंज़िल मिले तो खुशी,
वादा है अपना जब तक है दम।
ज़िंदगी हर घड़ी में बदलती है रंग,
कभी जश्न होते कभी मनते ग़म।

राज सत्ता

रहे सास्वत सर्वदा,
सत्य का कर आचमन।
दमन आसुर वृत्ति कर,
दुश्मनों का कर समन।

सौर्य से अपनी विजय को,
जो यहाँ हासिल करे।
सर्वजन का हित लिए,
निःस्वार्थ जीवन प्रण करे।

आदित्य से जो तेज पा,
जो धरा का तम हरे।
ईश का वरदान पाकर,
राज सत्ता को वरे।

देशराग

कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानते हैं हम,
हो बड़े मासूम ये भी मानते हैं हम।
पर चिराग़ों से हुई है रौशनी गुम क्यूँ,
तुम न मानोगे वजह पहचानते हैं हम।

रहबरों ने साथ रहकर करदिया बेदम,
लूटकर ख़ुशियाँ दिया है हर किसी को ग़म।
है वहम मस्ती भरा है हाथ में परचम,
जाल में उलझे रहे हैं आप हों या हम।

नज़र में तासीर किसकी हो अंधेरा कम,
कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानते हैं हम।

लुटगई डोली दुल्हन की ये विदाई है,
उठरहा तूफ़ान घर में क्या कमाई है।
अब जो संसद में उठेगी देश की आवाज़,
या नज़र कुछ की रहेगी छीन लो ये ताज।

एक भारत श्रेष्ठ भारत हो न फिर बेदम,
कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानत्ते हैं हम।

राज जनता का रहेगा बात अच्छी थी,
माँ भारती का क़द बड़ेगा बात सच्ची थी।
हम चले थे किस तरफ़ क्यूँ राह भटकी है,
जाति मज़हब के भवर में नाव अटकी है।

फूटते हैं फिर ये छाले आँख भी है नम,
कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानते हैं हम।

जो निभाए ना क़सम अब छोड़ दो उसको,
है बंधी ज़ंजीर जो भी तोड़ दो उसको।
नज़रिया बदलो नज़र से ठीक पहचानो,
हर कोई अपना नहीं है बात ये मानो।

देश चमके तो रहेगी शक्ल पर शबनम,
कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानतें हैं हम।

देश की ख़ातिर किसीका प्यार है कैसा,
ये कसौटी मात्र है राज हो जैसा।
ये सिपह सालार अपनी जंग अब छोड़ें,
खाई है जो भी क़सम अब और ना तोड़ें।

अब यहाँ पर देशहित की बात हो हर दम,
कुछ न बोलो हर हक़ीक़त जानते हैं हम।

शंखनाद 2024

अब सपनों में जीना छोड़ो,
आज हकीकत पहचानो।
उसने साबित कर दिख लाया,
तुम मानो या ना मानो।

किसने प्रतिद्वंदी माना है,
ख़बर है तुम को उन सबकी।
दौड़ रहे कुछ उसे हराने,
उसने दौड़ शुरू कब की।

उनकी थीं विपरीत दिशाऐं,
आज भी उनका हाल वही।
करना क्या था क्या कर डाला,
कब लोगों को खबर लगी।

कहते थे उत्थान जिसे वो,
वो रस्ते पाताल गए।
काट रहे थे जो डाली को,
वही चाहते फूल नए।

सच को सच कहना अच्छा है,
झूँठ को झूँठ बताना ठीक।
उलटे पृष्ठ स्वयं पड़ते जो,
अब दिन रात रहे हैं चीख।

जहाँ मित्र हो चाटु कारिता,
झूठी मीठी औसधि हो।
कहाँ निरोगी काया होगी,
कौन बचाए रोगी को।

तुम अपना कर्तव्य निभाओ,
वो भी अपना काम करें।
होनी कब टलने वाली है
जो होना है होने दें।

गठ बंधन सठ लोगों का हो,
हो चालाकी मेल जहाँ।
घुने हुए तिल जितना पीसो,
कहाँ मिलेगा तेल वहाँ।

हठ धर्मी सेवक कब होते,
कुछ आचार नहीं जिनका।
रंग बदलते देख के मौसम,
क्या विश्वास करें उनका।

आने वाला है फिर मौक़ा,
लगने वाला है मेला।
ताक में बैठे वही शिकारी,
दशकों तक जिनको झेला।

ना जाने अब विजय पताका,
कौन दुबारा फहराए।
कौन बजाए फिर शहनाई,
डोली किसके घर जाए।

अपनी है बस एक तमन्ना,
दुल्हन का घरबार बसे।
उसको नज़र न लगने पाए,
नाग कोई फिर नहीं डसे।

है पहचान सभी को अब तो,
है सामान सभी घर में।
अब है बेहतर हाल हमारा,
ज्यादा दर्द नहीं सर में।

होश हवास बनाए रखना,
देश सभी का घर मानो।
अब सपनों में जीना छोड़ो,
आज हकीकत पहचानो।

हमसफ़र

चाहतें पूरी नहीं हैं हैं तभी दूरी कहीं,
बेरुख़ी के साथ हैं लाख मजबूरी कहीं।
रोज़ आती है सुबह रोज़ डलती शाम है,
थीं कभी नज़दीकियाँ अब बड़ी दूरी कहीं।

क्या करें उन से शिकायत जो निभाते ही नहीं
तब आम थे अब ख़ास हैं है जो मशहूरी कहीं।
बस अना के वास्ते हम हाथ फैलाते नहीं,
या तो रब हो महर्बा या हो मज़दूरी कहीं।

अब सफर के वास्ते हम सफ़र वो चाहिए,
वो कहीं या हम कहीं हों बात हो पूरी कहीं।
थी सुदामा को खबर बस कृष्ण मेरे साथ है,
ये कभी मुमकिन कहाँ हो जो मगरूरी कहीं।

सफ़र

ये गर्मी का महीना है,
भीगा तन पसीने में।
यही मौसम मिलाएगा,
सावन के महीने में।

न घबराना न इतराना,
हवा या इन घटाओं में।
हैं क़ुदरत की ये सौग़ातें,
मिलेंगी सब क़रीने में।

ख़यालों में छुपी नफ़रत,
जला देगी तेरा घर भी।
निभाए क्या कोई रिश्ता,
कातिल के सफ़ीने में।

चाहत है जो खुशियों की,
तो आँसू पौछना सीखो।
वो आंसू है सितारों से,
ये आँसू हैं नगीने में।

किसी का दर्द बाँटा है,
वही बंदा फ़रिश्ता है।
मिलती है खुशी उसको,
सभी के साथ जीने में।

इबादत हो अकेले में,
वकालत भीड़ की करते।
छलकते जाम ये कैसे,
किसी के अश्क़ पीने में।

अजब सी बात करते हैं,
ग़ज़ब तासीर है उनकी।
डर लगता है अपनी मौत से,
मस्ती भी न जीने में।

इधर हैरान है जे.पी.,
उधर रोता है शैदाई।
कितनी देर लगती है,
कफ़न एक बार सीने में।

ज़रा संभल के

अच्छा अच्छा मींठा मींठा,
खट्टा-खट्टा तीखा तीखा।
ठीक भी है और ठीक नहीं,
दुनिया दारी सीख कहीं।

दूर हो चाहे पास हो कोई,
हंसती दुनिया दिखे न कोई।
उजड़ा चमन वहीं कुछ पल में,
जहाँ चेतना पूरी सोई।

दुश्मन दोस्त कहीं हो कोई,
मान घटाती भीख वहीं।

यार ने प्यार जताया है,
अच्छा सबको भाया है।
देख तराजू इधर उधर,
थोड़ा बहुत सवाया है।

मुफ़्त में माल कहाँ मिलता
खाया है तो चीख नहीं।

आज जमाना बदल गया,
वक्त पुराना निकल गया।
मतलब को ना बाप बना,
जोभी देखा फिशल गया।

भूल पुरानी बातों को,
अब कोई तारीख़ नहीं।

सर न उठाना सर न झुका,
इज्जत देकर आँख मिला।
ओरों को आँखें न दिखा,
खुद भी थोड़ा सा झुकजा।

हो कितना मशहूर कोई,
पर लोंगो पर चीख नहीं।

देखे बहुत जमाने हैं,
लोग बड़े पहचाने हैं।
लोग बड़े मतवाले चाहे,
फिर भी कुछ दिल वाले हैं।

सच्चा सौदा सदा खरा,
आतुर होकर रीझ नहीं।

ज़रा संभलकर पैर बढ़ा,
गिरकर ऐसे चोट न खा।
लहरों का न भरोसा है,
कहाँ न जाने धोखा है।

छुपी दरारें घर में हैं,
जिनकी नीयत ठीक नहीं।
दुनिया दारी सीख कहीं,
दुनिया दारी सीख कहीं।

काम अधूरे

अभी भला रुकजाऊ कैसे,
अभी भला झुक जाऊ कैसे।
कुछ यादों की गठरी खोलूं,
स्वप्न अधूरे उन्हें टटोलूँ।

मुक्त कंठ से गीत सुनाऊ,
छुपी हृदय की पीड़ा गाऊँ।
अभी मोंन हो जाऊ कैसे,
अभी भला सो जाऊ कैसे।

माना नव निर्माण हुआ है,
अभी प्रगति का द्वार छुआ है।
लेकिन ऊचे आदर्शों ने,
धरती का पाताल छुआ है।

सारा हाल बताऊ कैसे,
अभी भला रुक जाऊ कैसे।

माली चैन कहाँ से पाए,
पूर्ण बाग जब फले न फूले।
बिन बरसा के कैसा सावन,
बिन हरियाली कैसे झूले।

पात-पात नहलाऊ कैसे,
अभी भला रुकवाऊ कैसे।

देश ज़रा मज़बूत हुआ है,
फिर भी छेद बहुत हैं बाक़ी।
अभी रौशनी हुई बहुत कम
अब भी बहुत अंधेरा काफ़ी।

जन जन को समझाऊ कैसे,
अभी भला रुकजाऊ कैसे।

समाचार पत्रों में छपते,
अपराधों के लाखों क़िस्से।
निर्भय लोग सभी जी पाएं,
शेष काम कितना है हिस्से।

सारा विष पी जाऊ कैसे,
अभी भला रुकजाऊ कैसे।

कशमकश

देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।
सोचता हूँ सोच में क्यों,
घुप अंधेरे का वरण है।

चाहता है कौन अब,
दीप से दीपक जलाना।
चाहता है कौन फिर से,
जीभ होठों पर फिराना।

है प्रतीक्षा आज किस को,
शहद का टूटे घड़ा फिर।
लूट में हो कौन शामिल,
रह सके अड़के खड़ा फिर।

सत्य क्या है झूठ क्या,
अधिकार क्या है लूट क्या।
क्या नियम नैतिक अनैतिक,
स्वार्थ कितना छूट क्या।

भाग्य ग्रह नक्षत्र सारे,
काम अपना कर रहे हैं।
हैं शिकारी तीर ताने,
लोग खुद ही मर रहे हैं।

हस रहा है कौन छुप कर,
रो रहा है कौन घुटकर।
आ गया है कौन छुट-कर,
जा रहा है कौन लुट-कर।

है प्रभों तेरी शरण हैं,
आज कैसा आचरण है।
देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।

अब खुली चौपाल पर,
कुछ लोग हुक्का भर रहे हैं।
जो कोई बाधा बने तो,
धौल धक्का कर रहे हैं।

पी सड़क पर जाम चाहे,
या सिकी रोटी कड़क हो।
हाथ में रख लट्ठ प्यारे,
और हल्ला बेधड़क हो।

पक चुकी घर में फ़सल,
रोज़ अनशन आमरण है।
देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।

फ़सगई है आज रज़िया,
कुछ शरीफ़ों की गली में।
है कसैला स्वाद फ़ैला,
आज मिशरी की डली में।

कौन अब समझाए किस को,
समझ कुछ आता नहीं है।
चैन भी मिलता नहीं हैं,
प्रांढ़ भी जाता नहीं है।

रोज़ का पोषण भरण है,
रोज़ ही जीवन मरण है।
देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।

सिलसिला रुकता नहीं है,
ग़लत भी झुकता नहीं है।
सत्य को झूठा बताते,
झूठ को मिलकर पचाते।

अब हड़पने की प्रथा है,
क्या कहूँ लंबी व्यथा है।
चुप रहूँ तो प्राण छूटें,
सच कहूँ तो लोग लूटें।

चीर का होता हरण है,
दिग्भ्रमित अब भी करण है।
देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।

तीन पग त्रैलोक लीला,
हो चुकी पूरी मुरारी।
पर अभी तक देव दानव का,
भयंकर युद्ध जारी।

हैं अंधेरों के पुजारी,
ज्योति का संघर्ष भारी।
दो दिशा कुछ बुद्धि को अब,
याचना है ये हमारी।

हो रहा है अब धरा पर,
प्रेम का कितना क्षरण है।
नाथ बस इतना बतादो,
क्या यही अंतिम चरण है।

देखता हूँ पूर्णिमा पर,
बादलों का आवरण है।